## स्व की आहट, ना करो मुझे आहत...

एक महात्मा के पास बहुत से सेवक आते हैं, कोई कहता है कि मैं तीस साल से आदिवासी बच्चों की सेवा कर रहा हूँ, कुछ शिक्षा दे रहा हूँ, कोई कहता है कि मैं अस्पताल बनवा रहा हूँ आदि आदि। उनकी बात सुनकर महात्मा कहते हैं कि अभी-अभी एक महिला मेरे पास आई, कहती है कि मैंने तीस साल अपना पूरा जीवन सेवा में लगा दिया। तो मैंने उससे पूछा कि तुमने सेवा की वह ठीक, तुमने अपना जीवन लगाया वह भी ठीक, बाकि जिन बच्चों के लिए तुमने तीस साल जीवन लगया उससे उनको कुछ लाभ हुआ या नुकसान हुआ? असली सवाल तो यह है कि उन बच्चों के जीवन में शांति बढ़ी कि घटी? सुख बढ़ा या घटा? वे कम आनंदित हुए या ज्यादा आनंदित हुए? तो ज़रा सोच में पड़ गई वो क्योंकि मैंने कहा कि आदिवासी बच्चों को पढ़ा लिखाकर ज्यादा से ज्यादा इतना ही करोगी कि हमारे बच्चे जैसे हैं उस तरह के हो जायेंगे, और क्या होगा? हमारे बच्चे कौन से स्वर्ग में हैं! इधर हम परेशान हैं अपने बच्चों से क्योंकि उनको पढ़ा-लिखा दिया है, अब वे यूनिवर्सिटीज़ जला रहे हैं, प्रिन्सीपल को पीट रहे हैं, वाइस चांसलर का घिराव करके पत्थर मार रहे हैं, कोई कोई तो छुरा दिखा रहे हैं। ये हमने किया उन्हें शिक्षा देकर। आप आदिवासी बच्चों के लिए बड़ी मेहनत कर रहे हैं, आप कह रही हो कि मैंने जीवन लगा दिया। अगर आप सफल हो गई अपने काम में तो ये ही बच्चे यही काम करेंगे, और क्या करेंगे! कौन सा लाभ हुआ जा रहा है? लेकिन उसे लाभ से कोई मतलब नहीं है क्योंकि वो व्यस्त है, क्योंकि व्यस्त रहना एक तरकीब है बेचैनी से दूर रहने की। वो अच्छे काम में लगी है तो भीतर देखने का मौका नहीं आता, वह बहुत अशांत है, परेशान है, दमित है, सारे वेग रोग बन गये हैं भीतर, लेकिन उसने दूसरों की सेवा में अनपे को उलझाया हुआ है। इस सेवा की व्यस्तता में उसे ख्याल भी नहीं आता कि मेरी भी कोई परेशानी है।

- ब्र. कु. गंगाधर

अक्सर लोग दूसरों की परेशानियों में उलझ जाते हैं, अपनी परेशानी भूलने के लिए। यदि उन्हें आप कहें कि पांच दिन की छुट्टी ले लो सेवा से तो....। क्योंकि पांच दिन में भी उन्हें अपनी परेशानियाँ दिखाई पड़नी शुरु हो जायेगी। आदमी स्वयं अपने आप से ही चालाकी करता रहता है। अपने आप से पलायन करने के भी बहुत रास्ते हैं, वह दूसरो में अपने को उलझाये रखने लगता है ताकि अपने से बच सके, अपना ख्याल ही न आये! भाग दौड़ में लगा रहता है, स्कूल खोलना है, आश्रम बनाना है, दिल्ली जाना है! वह महिला इसी काम में लगी है! चंदा इकट्ठा करना है, एक बस लानी है, यही लगा हुआ है, फुर्सत कहाँ है!

मैंने उससे पूछा कि तुम शांत हो? उसने कहा नहीं, शांत तो नहीं हूँ, आप कोई रास्ता बतायें। मैंने उसको कहा कि तुम आबू शिखर में आ जाओ, उसने कहा कि वह तो बहुत मुश्किल है, इस वक्त मुझे दिल्ली जाना है। किसलिए दिल्ली जाना है? एक अस्पताल खुलवाना है आदिवासियों के गांव में! मैंने उससे पूछा कि जहाँ अस्पताल है वहाँ ज्यादा लोग स्वस्थ हैं कि आदिवासी? जहाँ अस्पताल नहीं है, वहाँ ज्यादा लोग स्वस्थ हैं। पहले इसकी फिक्र कर लो, क्योंकि अस्पताल इलाज भी लाता है, बीमारियाँ भी लाता है। आदिवासी ज्यादा स्वस्थ हैं मगर उसको तो अस्पताल खोलना है! वह बोली कि यह बात तो ठीक है लेकिन अस्पताल के बिना ठीक नहीं है, अस्पताल तो ज़रूरी है, प्रगति होनी चाहिए। वह यह भी मानती है कि आदिवासी ज्यादा स्वस्थ हैं, लेकिन अस्पताल होना चाहिए! फिर किसलिए अस्पताल होना चाहिए? इससे तो ठीक सेवा यह होगी कि जहां अस्पताल है, वहाँ से अस्पताल मिटाओ और लोगों को आदिवासी बना दो, अगर स्वास्थ्य का ही रस है तो। अगर कोई और रस है, तो बात दूसरी है। लेकिन स्वास्थ्य तो आदिवासियों का ज्यादा अच्छा है। मगर वो बोली कि नहीं, आप जो कहते हैं वो ठीक है, अभी तो दिल्ली जाना ही पड़ेगा, फिर मैं किसी दूसरे मेडिटेशन की शिविर में आऊँगी।

उसका ध्यान, शांति में कोई रस नहीं है। अशांति को निकालने की तरकीब उसने आदिवासियों की सेवा बना ली है। कोई आदमी दुकान पर अपनी अशांती निकाल रहा है, पैसा कमाने में लगा है, उसे कोई मतलब नहीं है दूसरी बातों से, कोई राजनीति के चक्कर में लगा है, इलेक्शन जीतना है, मिनीस्ट्री में जाना है, उसे कोई मतलब नहीं है आत्मा से! काई आदमी सेवा में लगा है, उसे भी कोई मतलब नहीं है आत्मा से।

लेकिन ध्यान रहे जो आदमी स्वयं को जाने बिना दूसरे **-शेष पेज 9 पर...**

## परचिंतन, परदर्शन से परे स्वदर्शन चक्रधारी

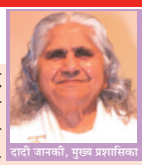
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा चाहता है मेरे बच्चे मीठे मीठे मधुर बनें। अगर कोई कडुवा बोलता है और मैं उसे याद करती हूँ, तो मैं मीठी कैसे बनूंगी। एक मक्खी बीमारियों को भगाने वाली है, दूसरी मक्खी बीमारी फैलाने वाली है। बीमारी फैलाने वाली दो मक्खियाँ इकट्ठी नहीं रह सकतीं। मधुमक्खी इकट्ठी संगठन में रहती हैं तभी तो मधु देती हैं। हम भी मधुबन में रहते हैं। तो मधु जैसा मीठा बनना है।

तो मुझ आत्मा को क्या करना है! यह क्या करता, वह क्या करता...नहीं। वैरायटी ड्रामा है भिन्न-भिन्न सीन सामने आती हैं। ड्रामा में जो मुख्य एक्टर हैं वह दूसरे की एक्ट नहीं देखते हैं। भले पार्ट के लिए पति पत्नी बनेंगे, बहन भाई बनेंगे, लेकिन अन्दर रहता मैं तो एक्टर हूँ, अभिमान नहीं रख सकता। मैजोरिटी को अपमान की महसूसता होती है। कोई विरला होगा जिसे मान की इच्छा नहीं, अपमान की फीलिंग नहीं। एक है दबाना, दूसरा है समाना। थोड़ा भी अपमान हुआ उसे दबाया तो अन्दर से शान्ति गुम हो जायेगी। वही चिंतन चलता रहेगा। किसी से भी व्यवहार अच्छा नहीं होगा। अच्छे से भी अच्छा व्यवहार नहीं होगा। तो अपने को आवाज़ से परे जाना है ना! घर में जाना है ना! जब घर जाना कहती हूँ तो दीदी याद आती है।

दीदी का त्याग वण्डरफुल। तपस्या आँखों से देखी है, कभी कोई देहधारी की तरफ ज़रा भी लगाव झुकाव नहीं देखा। यह हमारे पूर्वज हैं। चन्द्रमणि दादी को याद करूं या शान्तामणि दादी को याद करूं। बाबा हर एक को प्यार से देखता था। शान्तामणि के लिए कहा यह बहुत सच्ची है, सचली कौड़ी है। मैंने कहा मुझे भी सच्चा बनना है। दीदी ने कहा बाबा से तुम हंसकर मिलो ना! हमें लगता था यह भगवान है ना, उसे बाबा भी कैसे कहूँ! लेकिन अन्दर सच्चे पुरुषार्थी बाबा से सर्व संबंध का अनुभव करते हैं। पहले कहेंगे माँ है, फिर बाप, शिक्षक, सतगुरू, सखा, साथी बन जाता है। टीचर साक्षी होकर प्ले करना सिखाता है। सतगुरू श्रीमत देता है। जो श्रीमत देता है उस पर चलने की भी शक्ति देता है। मनमत नहीं चलती। तो यह चेक करना ज़रूरी है। हम बाबा से मिलने मधुबन में बैठे हैं, परचिंतन परदर्शन से परे हैं! जो दोनों से परे रहते हैं, वह स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं।

एक बाबा के बच्चे हैं, बहन भाई हैं। कुछ मुख्य बातें हमारे जीवन में प्रैक्टिकल हों, बाबा मम्मा ने ध्यान खिंचवाया है, बच्चे इस पढ़ाई की वैल्यू चाहिए। वैल्यु होगी तो पढ़ाई प्रैक्टिकल लाईफ में होगी, भगवान की पालना का कदर होगा। मुझे स्वयं भगवान ने अपना बनाया है, बचपन से लेकर आज तक उसकी पालना के नीचे रहे हैं। कभी अधीनता का संस्कार ही नहीं है। पालनहार इतनी पालना दे रहा है, भावना यह है, यह ईश्वर की पालना के अंदर आ जावे। तो देही-अभिमानी स्थिति बनेगी। मेरा मकान है, मेरा यह है...मेरा मेरा कुछ भी कोने में पड़ा होगा तो ईश्वर की पालना नहीं ले सकेगा। समझने वाली बातें हैं। यह बातें धारण करने के लिए बुद्धि चाहिए। सच्चा पुरुषार्थी क्या करता है? बुद्धि अच्छी रखता है। ज्ञान धारण करेंगे, बुद्धि से तब योग लगेगा, योग से विकर्म विनाश होंगे। अगर मेरे विकर्म विनाश हुए हैं, तो बीमारी अगर आयेगी भी तो थोड़ी सी कोई दवाई ली ठीक हो जायेगी। अगर महसूसता है कि मैं बीमार हूँ, तो यह भी कर्मभोग है।

जब कोई कहता है मुझे यह पता नहीं है, माना उसके पास एड्रेस नहीं है। अगर पता नहीं है तो ज़रूर धक्के खाता रहेगा, बुद्धि ठिकाने पर नहीं लगेगी। बाबा कहता है सिर्फ इसको पता बता दो। कहाँ जाना है! क्यों जाना है, क्या करने का है! कईयों की भाषा हो गई है बार बार कहेंगे पता नहीं, पता नहीं। आई डोंट नो। अरे बुद्धू है क्या! बाबा कहता था यह बुद्धू है, जो कहता आई डोंट नो। और कुछ बोलने आयेगा ही नहीं इसलिए बाबा कहता बच्चे बुद्धि को अच्छा बनाओ जो बाप को भी जान सको, खुद को भी जान सको। जो जानते हैं उनको अच्छा पहचानने की इच्छा होती है। प्राप्ति पहचानने के बाद होती है। देखा या जाना लेकिन पाया क्या! बाप से मैंने क्या पाया है?

पहले गीत बना था हमने देखा, हमने पाया...बाबा ने कहा इसे करेक्शन करो। देखा नहीं जाना, हमने जाना, हमने पाया शिव भोला भगवान। है भोला परन्तु भोला कह करके अपना बनाकर हमको कहता, देखो मैं कौन हूँ!

## ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप 'खुशी' आज भी और कल भी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

टीचर माना ही अपने फीचर्स द्वारा फ्यूचर दिखाने वाली। टीचर्स अपनी सूरत और कर्त्तव्य द्वारा प्रत्यक्ष करती हैं कि हमारा राज्य आया कि आया, जिसे दुनिया वाले चाहते हैं। आप और हमें देख लोग यही कहते हैं कि ये न्यारे और निराले हैं। टीचर्स हर एक समझती हैं कि बाबा मेरा है। जिससे प्यार होता है उसकी विशेषता ज़रूर धारण होती है। हम सभी ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण, लक्षण और विशेषता धारण कर भविष्य का नक्शा तैयार कर रहे हैं। तो हम सभी बाबा के दर्पण हैं। बाबा क्या है? किसका है? यह हमारे चेहरे और चलन से दिखाई दे। बाबा ने हमें ऐसा तैयार किया है कि हमें बाबा और भविष्य ही दिखाई देता है। हमें अपने ईश्वरीय बचपन को देख वण्डर लगता है और हमें देख सभी को लगता है कि इनकी जीवन खुशमिज़ाज है। हम अमृतवेले से लेकर खुशी की खुराक खाते हैं। लोग तो तन्दरूस्त रहने के लिए घी खाते हैं और हम खुशी की खुराक खाते हैं। हम टीचर्स कितनी भाग्यशाली हैं। हाय-हाय के गीत भूल गये, वह स्वप्न में भी नहीं आता। हमारे दिल में वाह बाबा वाह! यही हमारा जीवन है। बाबा और सेवा में ही सारा दिन चला जाता है। जब से बाबा के बने, हमारी जीवन अलौकिक हो गई। हम सब बाबा के बच्चे स्वर्ग में जाने के लिए स्वयं को सजा रहे हैं। भविष्य में इस ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप खुशी होगी, अभी भी है और सदा रहेगी।

संगम पर हमारी कितनी महत्व वाली जीवन है। हमें देख दुनिया वाले कहते हैं वाह ब्रह्माकुमारी वाह! दुनिया वाले मैजोरिटी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारी जीवन कम नहीं, हम तो अनुभव करते हैं। तो हमारी सदा वाह वाह! रहे, कभी कभी नहीं। बाबा हमारे साथ हैं। मुख से बाबा बाबा निकलता है। वाह वाह! है, व्हाय तो नहीं निकलता? जैसी हमारी जीवन है, दुनिया में किसी की नहीं होगी। जैसा बाबा ने हमें बनाया है, ऐसा हमें सबको बनाना है, यही हमारी ड्युटी है। खुशी हरेक को देनी है चाहे किसी भी जात व धर्म का हो। सदा बाबा हमारे साथ है। कुछ भी होता है तो हम कहते - बाबा। बाबा भी कहते बच्ची क्या हुआ। बाबा हमें कमल का फूल बनाते हैं न्यारा और प्यारा। और फूल तो पानी में खराब भी हो जाते लेकिन कमल सदा ऊपर रहता है। हमारी जीवन भी ऐसी बन गई है। हम सहजयोगी हैं या मेहनत करते हैं? अगर कोई बात हो भी जाती है तो बाबा को दे दो, बाबा लेने वाला बैठा है। दिल से, प्यार से, बाबा कहते हो तो वह रक्षक तो होगा ना। बाबा के सिवाए कोई भी याद न आए। कोई भी बात बाबा को याद करने से खत्म हो जाती है, सब अनुभवी हैं। मेरा बाबा कह मेरेपन का अनुभव करो। बाबा के ऊपर सबका हक है। बाबा के लिये सब पर्सनल हैं, कोई भी साधारण नहीं। जो अपने को साधारण समझते हैं उनका भी बाबा के दिल में बहुत मूल्य है। संगम पर बाबा ने हमें इतनी खुशी दी है जो सतयुग में भी नहीं होगी। अभी थोड़ा समय है युग बदलने में। जब हम सतयुग में मिलेंगे तो मौज ही मौज होगी, ऐसी लाईफ का बीज अभी बो रहे हैं। बात कैसी भी हो, हम सन्तुष्ट तो सब सन्तुष्ट हो जाते हैं। कितना भी नुकसान हो जाये, हमें ज्ञान से परिवर्तन कर दौड़ लगानी है। बाबा को बच्चों से प्यार है, समझते हैं कल ठीक हो ही जाना है। हमें भी निश्चय है कि वह ठीक कर देगा। अगर ठीक नहीं होता तो इतना समय यज्ञ में नहीं रहते। बातें तो आयेंगी लेकिन बातें इतनी ताकतवर न हों जो मेरी खुशी ले जायें।